एक पत्र वर्ष 2109 के नाम

2019 तुम्हारा हार्दिक स्वागत है,तुम अपने नियति समय से एक पल भी गवाँये किसी को भी इन्तजार के चौराहे पर न खड़ा करते हुए नये परिवेश का लिबास धारण किये बिल्कुल नये अन्दाज में आये हो, तुम्हारे स्वागत के लिए एक मास पहले से मन के संसार में कल्पनाएं चक्कर लगाने लगी थी, स्वागत की तैयारी और तुम्हारे पूरे कार्यकाल के लिए नवीन योजनाएं मूर्तरूप करने के में ही खुशी का ग्राफ बढ़ता गया और तुम्हारे आने का आह्लाद घटाटोप अँधेरे और खून जमा देने वाली ठंड में भी उर्जा की गर्माहट पैदा कर रही है, तुम्हारे आने से ही पुराने वर्ष की लम्बी थकान चेहरे पर स्फूर्ति की चमक में बदल गयी है इसका ये तात्पर्य कतई नहीं कि 2018 के साथ हमें रहना गवाँरा नहीं या अच्छा नहीं था नहीं 2018 ने भी हमें सफलता के कई बड़े क्षितिज एवं खुशियों के अनेक अवसरों के पैकेज दिये, अपने आगमन पर ही सारे साल में माया के हर तूफान में भी चट्टान की तरह खड़े रहने के लिए वर्ष की बुनियाद में ही तपस्या का आधार दिया था जिसने जीवन के हर पहलू पर विकारों के वार से सुरक्षा कवच बनकर स्थिति को घायल एवं असहनीय दर्द की पीड़ा से बचाती रही, हाँ कई बार साधनों या संगदोष की अलबेलाई में अलमस्त होकर समय के लम्बे काल को यूँ ही गवाँया जिसका प्रतिफल माया को कई ब्रम्हास्त्र चलाने के चांस मिल गये, हालाँकि धरासायी तो नहीं हुए पर कमजोरी अवश्य आ गई थी पर अब हम पूरी तरह से सतर्क हो चुके हैं, 2018 ने हमें रोज 86400 सेकेण्ड का ब्लैंक चेक दिया उसके साथ परमात्मा पिता ने हर सेकेण्ड में श्रेष्ठ कर्म प्रभू याद में करने पर एक युग के बराबर प्राप्ति की फ्री योजना भी दी थी लेकिन कई बार आलस्य एवं कल कर लेने की की आदत ने मात भी खिला दी,पर असफलताओं ने हमें अनुभवों का खजाना तो दिया ही है,अनेक ऐसे पल भी दिये जिनमें दुआवों के दरवाजे खोल दिये,सेवाओं में भाग्य में पुण्य के लेख लिख दिये, अपने अंकों में बाप समान बनने की असीम प्रेरणायें छिपाये सदा 18 अध्याय पूरे करने की उमंगे भरता रहा 2018 को भी हमने खूब लाभ के साथ इंजॉव किया, कई छोटे–2 लक्ष्य भी निर्धारित किये थे जिनके पूरे होने पर खुशियों के पंख लगा सफलता की पोशाक पहन वैराग्य जैसे बहार–ए–बसन्त बन गया हो और आत्मबल जैसे अनेक संभावनायों की पटकथा लिखने लगा हो और नये चैलेन्जों चांसलर बनने के लिये हर वक्त तैयार रहा,और आज

तुम्हें नये कलेवर में देख हम और भी रोमांचित हैं कि तुम अपने अन्तस में मेरे लिए अनेक संभानावों को समेट कर लाये होंगें जो ताश के पत्तों की तरह रोज एक–एक निकालते नित नये अन्दाज में हमें मिलते रहोगे अब तो तुमसे 365 दिन मुलाकात होती ही रहेगी, हम तुमसे इस विश्वाश के साथ वादा करते कि जिस अन्दाज व नजरिये के साथ तुम आये हो हम उसी अन्दाज व जिन्दादिली के साथ तुम्हारा स्वागत एवं अभिनन्दन करते हैं,हम ऐसा भी नहीं सोच रहे कि तुम मेरे लिए कोई चैलेन्ज या मेरे लिए कोई समस्या लेकर नहीं आये होगें पर हम तुम्हारे हर चैलेन्ज का सामना करने के लिए तैयार हैं क्योंकि अब हम सौ प्रतिशत एलर्ट हो चुके हैं औ 2018 में की गई कोई भी गल्ती को रिपीट नहीं करना है पर हम तुम्हें नये क्षितिज के रूप में देख रहें हैं कि तुम्हारे साथ हम अपने सभी मूल्यॉकन कुछ इस तरह करेंगें कि कमजोरियों की कड़ी कहॉ है जहॉ–2 भी 19 है वहॉ–2 काम करने की जरूरत है ही, हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वाश है कि इस बार माया के किसी भी पॉस को पास करके ही रहेंगें क्योंकि हर चुनौती का सामना करने के लिए व समस्या को परीक्षा समझ पार करने की कूटनीति और मेरी प्रभूप्रीति भी हर समाधान के लिए तैयार है, निश्चित ही तुम मेरे लिए लकी नम्बर बनोगे, 2018 ने भी हमें 18 अध्याय पूरे कर नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा बन सम्पूर्ण पावन बनने के साथ बाप समान बनने के अनेक चांस दिये और हम भी कर लेंगें, हो जायेगा के भरोसे की आशा में जैसे बार–बार बेहोश सा करता रहा लेकिन अब हम पूर्णतया जाग्रत हो चुके हैं 365 दिन 8760 घंटे 525600 मिनट 31536000 सेकेण्ड आपके साथ पूरे मनायोग एवं अटल विश्वाश अथक पुरूषार्थ एवं नये उत्साह के साथ अनवरत कर्मयोग में कर्मव्रत रहेंगें,2018 में जिसमें भी 20–18 या 18–20 का अन्तर रहा उसमें 19–20 का भी फर्क नहीं रखना है,19 के पहले 20 लगाकर ही चलना है, इसके लिए हम अपने पूरे 20 नाखूनों अर्थात पैर से चोटी तक बल के साथ तुम्हारे साथ रहेंगें, 2018 से भी हमें कोई शिकयत नहीं है उसको भी हम शुक्रिया ही कहेंगें क्योंकि उसने भी बहुत ही शुभ किया और तुम्हें भी हम पूरी संजीदगी के साथ लेंगें क्योंकि तुम मेरी इच्छाओं एवं वादों का प्रतिबिम्ब बनने वाले हो 9 रत्न हो या 0 से लेकर 1 और 9 के बीच में कुछ छूट न जाये अर्थात सम्पूर्ण बनने में 19 में भी आप 20–19 का भी अन्तर नहीं रखने वाले हो, इसलिए हम तुम्हें बिल्कुल नये आयामों, नये मंसूबों,नये के अनुरूपों से लेकर 2 बार जीरो लगने के बाद तो एक ही साथ नव निधियॉ ही लेकर चलेंगे, 2018 ने हमें पहले ही दिन से ही नये

पुरूषार्थ में नई अनुभूतियों के साथ परिवार की प्रशंसा के ब्लैसिंग्स ने सफलता की नई इबारत ही लिख दी थी, मुझे विश्वास है कि 2019 में भी हम इस उम्मीद के साथ चलेंगें कि तपस्या की सीढ़ियों के कदमों पर एक बल – एक भरोसा से चढ़कर अचल–अडोल एवं एक रस स्थिति के शिखर को प्राप्त कर अविनाशी खुशियों की महफिलें तसदीक करेंगें, और 2018 में जो कोशिशें नाकाम रही या कमजोरियों की जड़ें गुप्त ही सही पर सजीव व गतिशील रहीं उन पर भी इकबाल करेंगें, और 2018 में जो दो जीरो एक आठ में आठों शक्तियों में सदा आर्डर में रखने में नाकामयाब रहे, पर अब 2019 में निश्चित 18 अध्याय पूरा करने के लिए नित नवीनता का प्रबल पुरूषार्थ करेंगें, योग की प्रज्जवलित अग्नि की तासीर अन्तस की गहराई में रख पवित्रता के प्रतिबिम्ब की परिकल्पना को साकर करेंगें, 2019 तुम्हारे संग सम्पूर्णता के साथ संपंनता का आगाज ही नहीं अंजाम तक ले जायेंगें ।

ओम शान्ति

ब्र0 कु0 सुमन

जानकीपुरम लखनऊ